सूर्यबाला के कथा–साहित्य में संवेदना के विविध स्तर

–अनार यादव
शोध–निर्देशिका : डॉ. वीणा छंगाणी

शोध सार : सूर्यबाला जी के व्यंग्य, आलेख, कहानियाँ अथवा उपन्यास–विविधमयी विधा लेखन में एक विषय प्रथम, प्रसिद्ध एवं समानरूपेण चित्रित हुआ है–वह है संवेदनात्मक अनुभूति। बारह से अधिक कहानी संग्रह, छः उपन्यास, अनेक व्यंग्य लेख सूर्यबाला की लेखनी से अभिव्यक्ति पाकर हिन्दी पाठकों में चर्चित हुए है। ज्वलन्त समस्याओं तथा यथार्थ की अभिव्यंजना करते हुए लेखिका ने संवेदना शून्य होते जा रहे मानव हृदय पर, सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को, जीवन में प्रस्तुत होने वाली अप्रत्याक्षित घटनाओं को, मनुष्य की निजता को सार्वजनिकता तक लाने हेतु भावात्मक मनोविज्ञान का सहारा लेकर अपनी कृतियों में संवेदनाओं को विविधमुखी विषयों, भिन्न–भिन्न पात्रों का आधार लेकर कलात्मक ढ़ाँचे में ढ़ालने का असंभव प्रतीत होने वाला सफल कार्य किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र 'सूर्यबाला के कथा–साहित्य में संवेदना के विविध स्तर' सूर्यबाला जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के संग उनके कहानी–उपन्यासों का समग्र–सम्यक विश्लेषित अध्ययन प्रस्तुत कर, समकालीन लेखिकाओं से इत्तर लेखन हेतु प्रसिद्धि के कारणों की खोज करते हुए सूर्यबाला जी के साहित्यिक–प्रयोजन को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

बीज शब्द : सूर्यबाला, संवेदना, स्तर, परिवार, नारी, जीवन, साहित्य, उपन्यास, कहानी।

मूल आलेख : मानव हृदय की सूक्ष्म संवेदनाएँ, समाज के समूहों में व्याप्त संवेदनाएँ, परिवार का पारस्परिक व्यवहार, नारी हृदय जैसे जटिल विषय के प्रति बेबाक अभिव्यक्ति, बालिकाओं को भी स्त्री विमर्श में शामिल करना, समाज–परिवार द्वारा उपेक्षित वृद्ध हृदयों की मार्मिक भावनाओं–इन सभी को सूर्यबाला जी ने भिन्न–भिन्न परिवेशानुरूप अपने कहानी एवं उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक शैलियों से गुंथकर प्रस्तुत करने का कार्य किया हैं। सूर्यबाला जी ने उपन्यासों एवं कहानियों में संवेदना के विविध स्तर देखे जा सकते है जैसे–यामिनी कथा उपन्यास में यामिनी की दारुण संवेदनाएँ, 'न किन्नी न', रहमदिल जैसी कहानियों में, एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम जैसे कहानी संग्रह में नारी पात्रों के साथ अन्य वर्ग के पात्रों की हृदयगत संवेदनाओं को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है। आत्मकथात्मक, व्यक्तिप्रधान–भावप्रधान शैलियाँ इन संवेदनाओं को अधिक मुखरता प्रदान करती है। सरल, सहज, अभिधात्मक बोधगम्य भाषा सोने पर सुहागा जैसी रही है। भावपक्ष जितना मुखर एवं भावाभिव्यक्ति वाला रहा है। कला पक्ष भी उतना ही सामर्थ्यवान तथा सामाजिक शक्ति से परिपूर्ण रहा है। सूर्यबाला जी की एक बड़ी विशेषता ग्रामीण शब्दावली युक्त लोकोक्ति–मुहावरों का प्रयोग करना रही है, जो एक रागात्मक संबंध पाठक के साथ सहज रूप से उत्पन्न करता है। पाठक कब प्रथम पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ की यात्रा कर लेता है उसे लेशमात्र् भी आभास नहीं हो पाता है। यही शब्दों की जादूगरी कहीं जा सकती है जो

कब कागज से निकल हृदय में उतर आत्मानुभूत हो जाती है–पता ही नहीं चलता। इसे ही साहित्य की सार्थकता, साधारणीकरण की उपमा से विभूषित किया जाता रहा है।

सूर्यबाला जी का व्यक्तित्व–

'आँसू से भीगे आँचल पर
अपना सबकुछ रखना होगा।
उसको अपनी स्मित रेखा से
यह संधि–पत्र, लिखना होगा।'[1]

एक उच्च मध्यमवर्गीय परिवार में 25 अक्टूबर, 1944 ईस्वी को जन्मी सूर्यबाला। स्थान था भारत की धार्मिक नगरी काशी। पिता श्री वीर प्रताप सिंह और माता श्रीमती केशर कुमारी। परिवार की आर्थिक स्थिति भी अच्छी थी और धार्मिक परिवेश भी संस्कारित रहा था। माता श्री, लाला भगवानदास की पुत्री होने के कारण हिन्दी, उर्दू जैसी साहित्यिक भाषाओं का ज्ञान अपने साथ लेकर आई थी, पिता श्री वीर प्रताप सिंह शिक्षा विभाग में पाठ्यक्रम निर्धारण संबंधित विभाग में उच्च पद पर कार्यरत थे। पैतृक सम्पत्ति, पिता का सरकारी नौकरी, माता का आदर्श गृहिणी होना तथा तीन बहनें तथा एक भाई के मध्य रहकर सूर्यबाला को एक उच्च मध्यमवर्गीय शिक्षित, सम्पन्न तथा संस्कारित परिवार मिला था।

सूर्यबाला का बचपन राजसी ठाठ–बाट में बीता। आठ–नौ वर्ष की उम्र तक आप किसी भी स्कूल में नियमित नहीं रही क्योंकि आपके पिताजी की (जो कि शिक्षा विभाग के अधिकारी थे) नौकरी के कारण घर पर कमरों में प्रायः पाठ्य पुस्तकों का ढ़ेर लगा रहता था। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, विशंभर नाथ शर्मा 'कौशिक', चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', लाला भगवानदीन जैसे प्रसिद्ध कथाकारों की कहानियों को (इन पाठ्य पुस्तकों से) सूर्यबाला ने बालपन में ही पढ़ लिया था। शाम के समय पिता के साथ बैठकर कठिन शब्दों का अर्थ, कहानी का उद्देश्य सूर्यबाला समझ लेती थी। साहित्य के प्रति तीव्र रूझान बालपन से ही इसी कारण इनमें विकसित हो चुका था। शिक्षा की आधारशिला घर में ही माता तथा अतिथि शिक्षक द्वारा तैयार करवाई गई। छठीं कक्षा तक की शिक्षा घर पर तथा उसके उपरान्त आर्य महिला स्कूल में हुई। सूर्यबाला की रूचि शिक्षा में रमी। मन लगाकर की गई पढ़ाई के कारण सूर्यबाला जी ने प्रत्येक कक्षा में उच्च अंक अर्जित किये। भाग्यबली होता है जिस कारण आकस्मिक पिता का देहांत हो जाता है।

''बचपन में ही लेखिका सूर्यबाला जी अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि, संयमी व अनुशासन प्रिय, विनम्र तथा संकल्पी थी। जिनका प्रभाव उन पर पड़ा। विषम परिस्थितियों के चलते आपको सूर्यबाला जी के आत्मकथांश के अनुसार–पिताजी की मृत्यु ने हमें समाज में खुलेआम निरीह और अनाथ प्रमाणित कर गई। सूर्यबाला का बालपन कभी अमीरी तथा गरीबी में बीता।.......स्कूली जीवन का प्रारम्भ वाराणसी से प्रारम्भ हुआ था। कालान्तर में विषम परिस्थितियों से जूझ कर आपने डॉ. बच्चन सिंह के निर्देशन में शोध कार्य पूर्ण किया।''[2]

कालान्तर में सूर्यबाला जी का वैवाहिक जीवन प्रारम्भ होता है, साथ ही साहित्य सृजन का कार्य भी। व्यंग्य लेखन में हाथ आजमाने के बाद सूर्यबाला जी ने कथा साहित्य की ओर लेखनी अग्रसित की तथा संक्षिप्त शब्दों में कहें तो समकालीन महिला कथाकारों में इन्होंने अपनी अलग किन्तु विशिष्ट साहित्यिक पहचान बनाई है।

सूर्यबाला जी का कृतित्व–

"आज के युगीन परिवेश में हिन्दी कथा जगत में पिछले लगभग तीन दशक से अपनी लेखनी के माध्यम से कुछ नया प्रदान करती सूर्यबाला ओजस्वी व्यक्तित्व के रूप में विद्यमान है। उनके लेखन को देखें तो उनके असीम कथा साहित्य में गाँव से लेकर शहर तक और शहर से लेकर महानगर तक का वर्णन मिलता है तथा उनकी भाषा–शैली सरल, स्पष्ट तथा आसानी से पाठकों के लिए बोधगम्य है।"[3]

उपन्यास–मेरे सन्धि पत्र् (1978), दीक्षान्त (1978), सुबह के इन्तजार तक (1980), अग्निपंखी (1984), यामिनी कथा (1991), कौन देस को वासी : रेणु की ड़ायरी (नवीनतम)

कथा संग्रह–एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम, गृहप्रवेश, मुंड़ेर पर, गौरा गुनवन्ती साँझवाती, दिशाहीन, थाली भर चाँद, पाँच लम्बी कहानियाँ, कात्यायनी संवाद, मानुष गंध, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, इक्कीस कहानियाँ।

सूर्यबाला के कथा साहित्य में संवेदना के विविध स्तर–

संवेदना का तात्पर्य– मानव जन्मजात एक सामाजिक संरचना में रहकर सामाजिक प्राणी रहा है। जन्म होने के साथ ही मानव में संवेदनाएँ अपना आकार ग्रहण करने लग जाती है। यह संवेदनाएँ ही उसे पशु से अलग मानव की संज्ञा प्रदान करती है। संवेदना को मन मे घटित होकर अभिव्यक्त होने वाली वस्तु माना गया है। ये मानव हृदय का विषय रही है। अन्तर्जगत में प्रकट होकर बाह्य जगत में प्रदर्शित होने वाली इन संवेदनाओं को मानव माता के गर्भ से कुछ को लेकर प्रकट होता है तो कुछ को जीवन में अर्जित करता है। भावनात्मक पक्ष से जुड़ाव रखने वाली इन संवेदनाओं को ही साहित्य में स्थायी भाव तथा संचारी भावों के नाम से पुकारा जाता रहा है। संवेदना का शाब्दिक अर्थ सम्+वेदना से रहा है। इसी को विदेशी भाषा में फीलींग या सिम्पेथी भी कहा जाता है। किसी जन को दुःख या सुख में देखकर जब हम भी दुःख या सुख की अनुभूति करते है तो उस समान भाव को अनुभव करने की . प्रक्रिया को ही विद्वजनों द्वारा संवेदना का नाम दिया गया है। संवेदना को समझने के उपरान्त यदि हम साहित्य को समझे तो साहित्य का अर्थ विविधमुखी होकर भी एकमुखी ही रहा है।

साहित्य का अर्थ– स+हित अर्थात् सभी का समान रूप से हित चाहने वाली विधा साहित्य कहलाती है। साहित्यकार के विचारों, उसकी अनुभूति, उसके व्यक्तित्व, उनके सामाजिक दृष्टिकोण को जब कलापक्षीय अवदानों के साथ प्रस्तुत किया जाता है तब वह व्यक्तिगत होकर भी सार्वजनिक बन जाता है तथा साहित्य कहलाता है।

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

''मानव जाति की इस अनंत निधि में जितना–जितना कुछ अनुभूति का भंड़ार लिपिबद्ध है, वहीं साहित्य है और भी अक्षरबद्ध रूप जो अनुभूति संचय विश्व को प्राप्त होता रहेगा, वह होगा साहित्य।''[4]

साहित्य और संवेदना– साहित्य मानव जीवन–जगत की अभिव्यक्ति भावनात्मक तथा कलात्मक रूप से करता है। मानव मन की अनगिनत संवेदनाओं को साहित्यकार अपनी कलम से रेखांकित करता रहा है। जयशंकर प्रसाद की आँसू, निराला की सरोजस्मृति, महादेवी की भक्तिन, प्रेमचन्द का गोदान अथवा नयी कहानी–वर्तमान उपन्यास ही क्यों न हो। हिन्दी साहित्य जगत में संवेदनाओं की भरपूर अभिव्यक्ति की गई है। ये संवेदनाएँ विविध परिवेश, स्तर, देशकाल तथा विषयों के अन्तर्गत अभिव्यक्त है। हिन्दी पद्य के साथ–साथ गद्य में भी विस्तृत–व्यापक रूप से संवेदनाओं को कलमबद्ध किया गया है। उपन्यास का पटल विस्तृत होने के कारण इस विधा में उप+न्यास के रूप में मानव जीवन के समीप के विषयों का बड़ा ही व्यापक वर्णन देखने को मिलता है।

''उपन्यास वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी ने उपन्यास को मानव जीवन का चित्रमात्र् समझा हैं। वे मानते थे कि उपन्यास के द्वारा लेखक मानव–चरित्र पर प्रकाश डालने के साथ–साथ उसके रहस्यों को भी उजागर करता है।''[5]

उपन्यास विधा प्रारम्भ से ही संवेदनायुक्त रही है परन्तु सत्तर–अस्सी के दशक में इस विधा में व्यापक परिवर्तन हुए तथा मानव जीवन का मनोविश्लेषणात्मक पहलू से वर्णन किया गया। इन उपन्यासकारों को नवीन शिल्प दृष्टि के कारण नये उपन्यासकार नाम से संज्ञित किया जाता रहा है। नये उपन्यासकारों में मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, सूर्यबाला, नासिरा वर्मा, कृष्णा सोबती, मेहरुन्निशाँ परवेज जैसे ख्याति प्राप्त उपन्यास विद्वजन रहे हैं। शोध–पत्र की शोध नायिका सूर्यबाला इस अग्रिम पंक्ति में सम्मिलित होकर भी अन्य नये उपन्यासकारों से अलग–इत्तर अपनी लेखनी की पहचान बनाती है। इनके उपन्यासों में मानवीय संवेदना को मनोवैज्ञानिक पहलू से तथा राजनीति, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जैसे विविध अन्तः संबंधों के साथ गुंथकर पाठक समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

कहानी विधा की यदि बात करें तो उसमें मानवीय संवेदनाओं का प्रखर रूप इस विधा के जन्म समय से ही देखने को मिल जाता है। उपन्यास विधा में जीवन का व्यापक चित्रण देखने को मिलता है जबकि कहानी विधा मानवीय जीवन के किसी एक अंश या टुकड़ें का ही चित्रण करती है। उपन्यास संवेदनाओं का समुंद्र है तो कहानी नदी का तीव्र वेग कही जा सकती है। साम्यवादी कहानी (आर्थिक संवेदना), मनोविश्लेषणात्मक कहानी (मनोवैज्ञानिक भावनाएँ), आँचलिक कहानी (ग्रामीण सांस्कृतिक संवेदनाएँ), महानगरीय कहानी (शहरी सांस्कृतिक परिवेश), यथार्थवादी कहानी (मानव की यथार्थ संवेदनाएँ), आदर्शवादी कहानी (मानव की आदर्श संवेदनाएँ) विविध प्रकार की मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करती रही है। एक टोकरी भर मिट्टी से लेकर वर्तमान नई कहानी तक में मानवीय संवेदना का गहन–विस्तृत एवं व्यापक रूप हिन्दी साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

सूर्यबाला जी के कथा–साहित्य (कहानी–उपन्यास) में यदि संवेदना के विविध स्तरों की बात की जाएँ तो यहाँ पर सूक्ष्म से सूक्ष्मतर संवेदनाएँ बेब़ाक रूप से अभिव्यक्त की गई है। सूर्यबाला जी का परिचय देना शब्दों की परिधि से परे है। उनमें तुलसी का परहित सुखाय, लोंजाइनस का उदात्त, कार्ल मार्क्स का समाजवाद, दरेद्रा का विखण्ड़नवाद तथा सबसे विशिष्ट वातावरण अनुरूप लेखन रहा है। जो साहित्यकार अपने समय को लेकर सृजन करता है उसकी रचनाओं में अमरता स्वयंभू उपस्थित हो जाती है। आकर्षक, सौम्य, गंभीर व्यक्तित्व के साथ गौरवान्वित करने वाले कथा साहित्य का निर्माण किस्मत के धनी की ही विशेषता होता है।

सूर्यबाला के उपन्यासों में वर्णित संवेदना–

मेरे संधि पत्र–सूर्यबाला का 1977 ई. में प्रकाशित यह प्रथम उपन्यास है। पत्रिका में प्रकाशित धारावाहिक रूपेण लिखित हुआ, प्रसिद्धि प्राप्त 'मेरे संधि पत्र' सूर्यबाला के उत्कृष्ठ लेखन का पर्याय है। शिक्षा नायिका के मानसिक द्वन्द्व और जीवन संघर्ष की करूण संवेदनाएँ इस उपन्यास की मुख्य विषय–वस्तु रहे हैं। शिवा के जीवन में दो पुरुष आते हैं। विधुर अधेड़ आयु के व्यक्ति से विवाह करने के उपरान्त शिवा दो सौतेली बेटियों को सगी बेटियों की तरह मानकर पालन–पोषण करती है। किन्तु आयु नियति के कारण पति की आकस्मिक मृत्यु, पुत्रियों के विवाह होने के कारण ससुराल चले जाना–इन कारणों की वजह से शिवा अपने फैमेली फ्रैंड रत्नेश के प्रति आकर्षित हो जाती है। किन्तु भारतीय स्त्रीत्व की रक्षा करते हुए शिवा अपने प्रेमबंधन को त्याग कर, जीवन से संधि कर आदर्श भारतीय नारी का परिचय देती है। प्रस्तुत उपन्यास नारी मन की कारूणिक कथा, नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व, बाल मनोविज्ञान, स्त्री मनोविज्ञान, पुरुष मनोविज्ञान, जीवन यथार्थ, समाज में नारी की वास्तविक दशा का वर्णन करते हुए समस्या–समाधान शैली पर भारतीय नारी के आदर्श का प्रतिष्ठापन किया गया है। मानव मन, नारी मन की संवेदनाएँ, सूक्ष्म मनोविज्ञान, बालमन की भावनाएँ मुख्य मानवीय संवेदनाएँ रही है।

सुबह के इन्तजार तक–1980 ई. में प्रकाशित यह उपन्यास सूर्यबाला के कथा साहित्य की सक्षमता का श्रेष्ठ उदाहरण रहा है। उपन्यास की नायिका मानू बलात्कार से पीड़ित, सामाजिक रूप से शोषित, उच्च वर्ग द्वारा दमित रही है किन्तु इतने संघर्ष देखने के उपरान्त भी स्वावलम्बन, जीजिविषा एवं प्रबल इच्छा शक्ति के बल पर वह जीवन को अच्छा बनाने का अथक प्रयास करती रहती है। नायिका मानू विश्व की तमाम स्त्री जाति का प्रतिनिधित्व करती हुई, मानसिक विकारों से मुक्त होकर, दुःख–सुख की संकीर्ण परिधि से निकलकर अपनी जिंदगी को उस मुकाम पर लेकर चली जाती है जहाँ पर आदर्श की पराकाष्ठा है। संवेदनाओं का कारुणिक चित्रण, मार्मिकता पूर्ण भारतीय नारी का चित्रण, संवेदनाओं का (सुख, दुःख, करुणा, प्रेम, घृणा, ममत्व) जीवन में उतार–चढ़ाव बखूबी इस उपन्यास में चित्रित किया गया है।

अग्निपंखी–1984 ई. में प्रकाशित अग्निपंखी उपन्यास युवा मन तथा वृद्ध मन की संवेदनाओं का समर्थ और सक्षम चित्रण करता है। जयशंकर पात्र को उसके पिता की मृत्यु के उपरान्त उसकी माता

साधारण गृहणी की तरह जीवन जीने के बाद भी अपने रिश्तेदारों से कर्ज लेकर उच्च शिक्षा ग्रहण करवाती है। किन्तु येन–केन–प्रकारेण जब वह शहर में नौकरी प्राप्त कर विवाहित हो जाता है तब अपनी वृद्ध माता को असहाय छोड़कर, असाध्य बीमारी में अकेला छोड़कर सांसारिक सुख–साधनों की तरफ झुक जाता है।

''प्रस्तुत उपन्यास में वर्तमान जीवन की त्रासदी, नौकरी के अभाव में युवकों की मानसिकता का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में यह बात स्पष्ट है कि यथाभाव, शहरी जीवन हीनता की ग्रंथि घुटन के कारण जयशंकर के अंदर का इंसान ही मर चुका है। जयशंकर को मशीनी जीवन में अपनी माता और पत्नी के साथ आर्थिक चुनौतियाँ–अभावों से जुझतें हुए दिखाया गया है।''[6]

यामिनी कथा–अग्निपंखी (आर्थिक संवेदना, मानव संवेदना, सामाजिक संवेदना) की तरह ही सूर्यबाला का एक अन्य उपन्यास यामिनी कथा भी संवेदनाओं के विविध स्तर को मार्मिकता पूर्ण स्पर्शिक चित्रण प्रस्तुत करता है।

''इस उपन्यास में सूर्यबाला जी ने आधुनिक नारी के जीवन की कभी न खत्म होने वाली मानसिक त्रासदी का बड़े ही भावनात्मक रूप से अभिव्यक्ति प्रदान की है। यह सूर्यबाला जी का प्रमुख उपन्यास है, यामिनी उपन्यास की नायिका है, वह एक अत्यन्त संवेदनशील नारी है, इस उपन्यास में वह एक पत्नी एवं माँ के रूप में विभक्त हो जाती है। यामिनी संत्रास, भय, कुंठा, तनाव और घुटनभरी जिंदगी को व्यतीत करते हुए तीन पुरूषों का आश्रय पाकर भी निंतान्त असहाय और अकेली महसूस करती है।''[7]

दीक्षान्त–दीक्षान्त उपन्यास सूर्यबाला का एक मार्मिक तथा प्रसिद्ध उपन्यास रहा है। मानवीय मूल्यों, जीवन के आदर्श उसूलों, जिंदगी की सच्चाई और शिक्षा व्यवस्था में फैला भ्रष्टाचार, घटती नैतिकता, उच्च द्वारा निम्न का शोषण, आत्महत्या जैसी निराशाजनक परिस्थिति इस उपन्यास की मुख्य संवेदना रही है। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संवेदनाओं के संग आर्थिक संवेदनाओं का भी सूक्ष्म से सूक्ष्मतर चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। शर्मा सर, उनकी पत्नी तथा पुत्र विजेन्द्र जिस माहौल में जी रहे हैं उसका सजीव चित्रांकन मिलता है।

''इसमें शर्मा सर के माध्यम से भारतीय विद्यापीठों में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर किया है। कॉलेजों में प्राध्यापकों के पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष और विद्यार्थियों की घातक राजनीति और अनुशासनहीनता के कारण शर्मा सर जैसा आदर्शवादी, ईमानदार, निष्ठावान प्राध्यापक हताश होकर आत्महत्या तक पहुँचता है।''[8]

कौन देस को वासी : वेणु की डायरी–यह सूर्यबाला जी की नवीनतम औपन्यासिक कृति रही है जिसमें 1990 ई. के उपरान्त अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न हुए पूँजीवाद को उकेरा है। मेधा और वेणु के माध्यम से आर्थिक, पूँजीवादी व्यवस्था के दोषों को उजागर करते हुए मानवीय संवेदनाओं का अत्यन्त ही मार्मिकतापूर्ण किया है। अमेरीकी संस्कृति को संवेदनाओं से विहिन बताते हुए भारतीय संस्कृति की मानवीयता, उनके ममत्व–अपनत्व, मूल्यसमर्पणता को दर्शाते हुए इसका तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत

किया है। बिल्कुल ही नवीन ड़ायरी विधा, संस्मरणात्मक रिपोर्ताज, यथार्थवादी शैली का समायोजन उपन्यास में मिलता है।

''हम वेणु की आँखों से और माँ, पिता, दोस्त, परिवार, नाते रिश्तेदारों के आपसी संवाद और अनुक्रियाओं के जरिए, उस पूरी हलचल का जायज़ा लेते हैं। जिससे अमरिका में भारतीयों की नई पीढ़ी को गुजरना पड़ता है। ....विदेशी पृष्ठभूमि में भारतीयों ने लेखन भी किया है। जिनमें प्रवासी भारतीयों के जीवन, रहन–सहन व संस्कृति, संवेदनाओं को चित्रित किया है।''[9]

सूर्यबाला की कहानियों में संवेदना का विविध स्तर–

''सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से अलग–अलग विषयों को उजागर किया है। महानगरीय जीवन, नौकरी करने वाली महिलाओं की समस्याएँ, पति–पत्नी के संबंध, वृद्ध व्यक्तियों की समस्या, गरीबी की समस्या आदि विषयों को केन्द्र में रखकर उन्होंने कहानियाँ लिखी है। उनकी प्रथम कहानी 'जीजी' अक्टूबर, 1972 में सारिका पत्रिका में प्रकाशित हुई। उनके 10 कहानी संग्रह प्रसिद्ध है 150 से ऊपर कहानियाँ प्रकाशित है। सूर्यबाला एक सशक्त कहानीकार के रूप में हमारे सम्मुख आती है। एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम, थाली भर चाँद, मुंडेर पर, गृहप्रवेश, साँझवाती, कात्यायनी संवाद, मानुषगंध, इक्कीस कहानियाँ, दिशाहीन, रेणु का नया घर, पाँच लम्बी कहानियाँ आदि।''[10]

सूर्यबाला जी कहानियों में संवेदनाओं के विविध स्तर देखे जा सकते हैं। इन विविध स्तरों में मानवीय संवेदना, सामाजिक संवेदना, पारिवारिक संवेदना, नारी संवेदना एवं बाल संवेदनाओं, वृद्ध संवेदनाओं के साथ आर्थिक संवेदनाओं का भी बड़ा ही तर्कसंगत, समयानुरूप, मार्मिक चित्रण किया गया है।

एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम–समान सतहें, व्यभिचार, सुलह, हाँ लाल पलाश के फूल...नहीं ला सकूंगा, दरार, अविभाज्य, निर्वासित, रेख तथा एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम जैसी नौ कहानियाँ इस कहानी–संग्रह में संकलित है। इनमें समान सतहें (आर्थिक संवेदना), व्यभिचार (मानसिक संवेदनाएँ), सुलह (सामाजिक एवं व्यक्तिगत संवेदनाएँ), हाँ लाल पलाश के फूल...नहीं ला सकूंगा (मूल प्रेम की व्यथा को लेकर अभिव्यक्त संवेदनाएँ), दरारें (अन्तर्संघर्ष की व्यक्तिगत संवेदनाएँ), अविभाज्य (अस्तित्ववादी मानसिकता को पिरोकर व्यक्तिगत मानसिक संवेदनाएँ), निर्वासित (दयनीय एवं करुण मनोवृत्तियाँ), रेस (जीवन जीने की तीव्र जीजिविषा), एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम (निराशावादी मनोवृत्तियाँ) में अनेक प्रकार की संवेदनाएँ व्यक्त की गयी है।

थाली भर चाँद–न किन्नी न, रहमदिल, तोहफा, रमन की चाची, पराजित, पड़ाव, संताप, झील, राख, सिर्फ मैं...., कहाँ तक, खोह, कहो न, थाली भर चाँद, बौद्धा, सुम्मी की बात जैसी कहानियाँ इस कहानी संग्रह की मुख्य विशेषताएँ रही है। किन्नी की मानसिक विड़म्बना, भ्रष्टाचार, निम्न वर्ग के शोषण, बालमन की आशाएँ, लाचारी एवं यंत्रणा, नारी संवेदना, लाचारी भरा जीवन, वृद्ध दंपति की कोमल भावनाएँ, दारुण माँ की असहायता, बाहर से शांत अंदर से घुटन भरी नारी की जीवन कथा, धार्मिक पाखण्ड़ पर आधारित धार्मिक संवेदनाएँ, आधुनिक परिवार का बड़ा ही संवेदनात्मक वर्जन प्रस्तुत

करने वाली कहानी कहाँ तक, खोह कहानी में स्त्री–पुरुष के मध्य का मानसिक द्वनद्व, कहो न कहानी की मुख्य नारी पात्र गीता के मनोभावों का अत्यन्त मार्मिक चित्रण, मानसिक यंत्रणा, व्यंग्य माध्यम से सूर्यबाला ने नारी अर्न्तमन, मनोविज्ञान, मानसिक संवेदना, राजनैतिक संवेदना, सामाजिक संवेदना, सांस्कृतिक संवेदना के साथ–साथ जीवन से जुड़ी अनेकानेक संवेदनाओं का चित्रण किया गया है।

दिशाहीन–कुल नौ कहानियाँ और सभी में संवेदनाओं का अथाह भंडार मिलता है। मेरा विद्रोह एक बालमन पर केन्द्रित कहानी है जिसमें आर्थिक संवेदनाओं का चित्रण मिलता है। कतारबद्ध स्वीकृतियाँ कहानी सिस्टर एसी के मानसिक अर्न्तद्वन्द्व व संवेदना को लिपिबद्ध करती है। गुजरती हदें विनय के अर्न्तद्वन्द्व को अत्यन्त ही मार्मिक रूप से चित्रित करती है। पुल टूटते हुए–कहानी में नारी मन की मानसिक यंत्रणा का चित्रांकन, दाम्पत्य जीवन, अर्न्तद्वन्द्व की कशमकश का चित्रण है। घटनाहीन कहानी के माध्यम से पूँजीवाद पर करारा व्यंग्य और गरीबी का मार्मिक चित्रण उपस्थित किया गया है। कंगाल कहानी नामानुरूप गरीबी–कंगाली की त्रासदी तथा इसके सिवा कहानी जीजिविषाधारित कहानी रही तो दिशाहीन और सिन्ड्रेंला का स्वप्न कहानी पुरूष तथा स्त्री संवदेना पर संवेदनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति करती है।

मुंड़ेर पर–इस कथा संग्रह में कुल दस कहानियाँ संकलित रही जो प्रसिद्धि को प्राप्त भी हुई है। किशोरी अंजू पर केन्द्रित मुंड़ेर पर युवामन की दारुणिक कोमल संवेदनाओं पर आधारित रही है तो फरिश्तें कहानी एक बालमन के कष्ट और संताप की कहानी है। अनाम लम्हों के नाम अतिसंवेदनशील परिवार की संवेदनाओं का कारुणिक वर्णन तो वे जरी के फूल युवती रूक्की पर आधारित रही हैं। सौगात एक नारी के ससुराल अन्तर्गत गृहस्थिक जीवन को, गैस मध्यवर्गीय परिवार की विड़म्बनाओं पर आधारित रही हैं।

''प्रस्तुत कहानी संग्रह सूर्यबाला की संवेदनाओं की धरोहर है। समाज की आँखों को चीर कर दिखाने का औजार लेखिका के पास है। वे कहती है कि देखो स्थिति इतनी गहन गंभीर है कि इसे तल तक महसूस करने की ताकत जुटा सकते हो तो जुटाओं, कम से कम महसूस ही कर सकते हों।''[11]

गृहप्रवेश–सूर्यबाला का यह कहानी संग्रह सबसे बड़ा, कुल ग्यारह कहानियों के संकलन वाला रहा है। इस कहानी संग्रह की विशिष्टता यह रही है कि ये पूर्णतः भावात्मक कथा संग्रह रहा है और सूर्यबाला ने इस कहानी संग्रह को अपनी माताजी को समर्पित किया है। गृहप्रवेश में आर्थिक विषमता, बाऊजी और बंदर में जीवन की व्यस्तता–सहानुभूति एवं सामाजिक रिश्तों का गठन चित्रण, सौदागर दुआओं के में सामाजिक संवेदना–हिन्दू मुस्लिम दंगों के प्रभावों का चित्रण मिलता है। होगी जय, होगी जय....हे पुरुषोत्तम नवीन कहानी में ईमानदारी और बेईमानी के द्वन्द्व तो समापन कहानी में वृद्धों की संवेदनाएँ, सुनो सुमित सुनो सुलभ कहानी में माता–पिता के संतान पर आश्रित होकर उपेक्षित जीवन जीना, सुखांतकों कहानी में आधुनिकतावादी वातावरण में भावनाओं–नैतिकतावादी–मूल्यविहिनता होते चले जाना, सलामत जागीरें में माता और पुत्र की पारस्परिक संवेदनाएँ, गुफ्तगू कहानी में भावात्मक

रिश्तें जो आधुनिक काल में खोते जा रहे हैं, दूज का टीका कहानी में बुआ, कुक्की और रतन भैया के भावनात्मक संबंध, गीता चौधरी का आखिरी सवाल कहानी में गीता के मानसिक संघर्ष का सजीव चित्रांकन मिलता है।

साँझबाती–कुल ग्यारह कहानियों का यह संकलन खुशहाल, सुमितंरा की बेटियाँ, गोबरच्चा का किस्सा, आखिरी विदा, सुनंदा छोकरी की डायरी, आदमकद, साँझबाती, दिशाहीन, कंगाल, विजेता, उत्तरार्द्ध जैसी सुप्रसिद्ध कहानियाँ रही है। इन कहानियों में वर्तमान आर्थिक समस्याएँ, राजनीति का साधारण जीवन में प्रवेश, भौतिकतावाद, अंधानुकरण जैसी विसंगतियों के द्वारा जीवन में होने वाले अप्रत्याक्षित बदलाव एवं हृदय की कोमल भावनाओं पर पड़ते कुप्रभाव को अत्यन्त बारीकी से चित्रित किया गया है।

कात्यायनी संवाद–''यह कहानी संग्रह आज के मनुष्य जीवन में व्याप्त फैली संवादहीनता की स्थिति को उजागर करता है।''[12]

बिन रोई लड़की, बहिश्त बनाम मौजीराम की झाँड़ू, कागज की नाव–चाँदी के बाल, एक लोन की जबानी, सीखचे के आर–पार, उत्सव, चोर दरवाजें, अन्तरंग, उजास, कात्यायनी संवाद, माय नेम इज ताता, जाते हुए, सुमिन्तरा की बेटियाँ, इत्यादि कहानियों में भावनात्मक, मनोविज्ञान तथा परिवेशगत प्रवृत्तियों को अत्यन्त ही सजीवता से उजागर किया गया है।

पाँच लम्बी कहानियाँ–पूर्व की पाँच प्रसिद्ध कहानियाँ गृहप्रवेश, भुक्खड़ की औलाद, मानसी, मटियाला तीतर तथा अनाम लम्हों के नाम रही है जिनमें सूर्यकांता की पूर्व–परिचित शैली ही देखने को मिली है।

मानुष गंध–कुल तेरह कहानियों का यह संग्रह पूर्व की प्रसिद्ध कहानियों का ही संग्रह रहा है।

और एक सत्य कथा (आत्मकथांश)–''इसमें सूर्यबाला जी ने अपने जीवन के अंतरंग पलों का यथार्थ वर्णन किया है। बचपन के पलों से लेकर पढ़ाई, पिताजी के शोक, पिताजी की असमय मृत्यु इत्यादि का चित्रण मिलता है। अपने इस कहानी संग्रह में सूर्यबाला जी कथ्य और शिल्प के पुराने प्रतिमानों को तोड़ते हुए नजर आती है। उनका यह कहानी–संग्रह सबसे प्रमुख संग्रह है क्योंकि इसमें उन्होंने अपने आत्मकथांश को संग्रहित किया है।''[13]

सूर्यबाला के कथा साहित्य का अनुशीलन–अध्ययन करने पर ये तो स्पष्ट हो ही जाता है कि इन्होंने समसामयिक परिवेश का बड़ा ही मार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक रूप से चित्रण प्रस्तुत किया है। मानसिक और आत्मिक संघर्ष, अन्तर्द्वन्द्व, संघर्ष, घुटन, संत्रास, जीजिविषा इत्यादि से लेकर सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक संवेदनाओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण सूर्यबाला जी ने बखूबी उकेरा है। सामान्य–सी दिखती रोजमर्रा की घटनाओं में छिपी विड़म्बनाओं, त्रासदियों को लेखिका ने अपनी बारीक नजर से पकड़ा है और सशक्त कलम से लिखा है। मानवीय संवेदना, सामाजिक संवेदना, पारिवारिक संवेदना, नारी संवेदना, बाल संवेदना, वृद्ध संवेदना को लेकर इन्होंने संवेदनाओं को विविध स्तरों पर व्यक्त किया है।

निष्कर्ष–इस प्रकार संक्षिप्त रूप में यदि कहा जाए तो सूर्यबाला जी के दस से अधिक कहानी–संग्रह, लगभग एक सौ पचास कहानियों तथा छः के आस–पास के उपन्यासों में संवेदना के अनेक विविधस्तरीय, विविधमुखी संवेदनाओं को व्यक्त किया गया है।

''लेखिका ने अपने उपन्यास साहित्य में मानवीय संवेदना को अत्यन्त मार्मिक ढ़ंग से अपनी लेखनी से उकेरा है। उन्होंने अपने उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' में मानवीय संवेदना को अभिव्यक्ति प्रदन की है। यथा–''इसे मेरी एकमात्र इच्छा नहीं व्रत समझ बुलू! शायद तेरे कुछ कर पाने का अहसास ही मेरे अंदर के विद्रोह की ज्वाला शांत कर सके। बस समझ ले, तू अपने लिये नहीं, मेरे लिये कर रहा है।''[14]

मानवीय संवेदनाओं को प्रस्तुत करने वाले इस उदाहरण के अलावा सामाजिक संवेदनाओं का पुट अग्निपंखी, समान सतहें, थाली भर चाँद, रहम दिल, दरारें, लाल पलाश के फल इत्यादि कहानियों में बखूबी देखा जा सकता है।

नारी संवेदना की बात करें तो इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम, न किन्नी न, बिन रोई लड़की, अन्तरंग, उजास, कात्यायनी संवाद, मानसी, साँझबाती जैसी प्रसिद्ध कहानियों के अतिरिक्त यामिनी कथा जैसे नारी प्रधान उपन्यास में पूर्णतः वर्णित किया गया है।

''ये हुक्मनामें का आदेश जारी करने का अधिकार क्या सिर्फ तुम्हीं लोगों को मिला है ? तुम लोग अनुभूति दोगें तो तुम्हारी सीमा में आऊँगी और दुतकार दोगे तो भिखारीन याचना की मुद्रा लेकर खड़ी रहूँगी।''[15]

मानवीय मन, नारीमन, वृद्धमन, बालमन, स्त्री–पुरूष संबंध, समाज के विविध वर्गीय चरित्र, पारिवारिक रिश्तें इत्यादि के चित्रण से सूर्यबाला ने मन की गहराईयों से मोती चुन–चुनकर निकाले है।

'कम से कम संवेदना की यह संजीवनी जिलाएँ रखेगी,
मेरे अंदर के लेखक और आदमी को भी।'

सूर्यबाला जी ने संवेदनाओं को हजारों स्तर पर व्यक्त किया है। इन्होंने अन्य महिला लेखकों की तुलना में अलग तथा विशिष्ट भावनात्मक रूप से प्रकट किया है। इन्होंने सामाजिक समस्याओं पर भी अपनी लेखनी चलाई है। इन समसामयिक महिला लेखकों से अलग सूर्यबाला जी ने नारी संवेदना को भारतीय परिवेशानुरूप, दाम्पत्य जीवनारूप, आधुनिकता का यथार्थ रंग देकर प्रस्तुत किया है। इसी कारण सूर्यबाला का भावुक कोमल हृदय जिन भावनाओं को प्रकट करता है वे हिन्दी की नहीं अपितु वैश्विक समस्त पाठकजनों हेतु स्वर्णिम अक्षर एवं अमर वाक्य बन वे भावनाएँ मानव–मस्तिष्क पर अपना स्थायी प्रभाव बना लेते है।

संदर्भ–

1. सूर्यबाला, मानुष गंध–उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 134

2. संगीता राणा, शोधार्थी, सूर्यबाला का कथा साहित्य–संवेदना तथा शिल्प, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2020, द्वितीय अध्याय, पृ. 49

3. पदुमलालज पुन्नालाल बख्शी तथा हेमचन्द्र मोदी, साहित्य शिक्षा, ई–पुस्तकालय, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार कार्यालय, बम्बई, पृ. 10, 4

4. संगीता राणा, शोधार्थी, सूर्यबाला का कथा साहित्य–संवेदना तथा शिल्प, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2020, द्वितीय अध्याय, पृ. 12

5. वही, पृ. 73

6. वही, पृ. 74

7. डॉ. रत्नमाला धारबा, सूर्यबाला के कथा–साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2014, पृ. 15

8. सूर्यबाला, कौन देस को वासी : वेणु की डायरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. 05

9. डॉ. रत्नमाला धारबा, सूर्यबाला के कथा–साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2014, पृ. 24

10. संगीता राणा, शोधार्थी, सूर्यबाला का कथा साहित्य–संवेदना तथा शिल्प, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2020, द्वितीय अध्याय, पृ. 92

11. वही, पृ. 101

12. वही, पृ. 112

13. वही, पृ. 209

14. वही, पृ. 210

15. वही, पृ. 210

–अनार यादव
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर
मोबाइल–9414474748
शोध–निर्देशिका : डॉ. वीणा छंगाणी
अधिष्ठात्री (मानविकी एवं कला विभाग)
अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर